✺ 7 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ **ज्ञान-**

1] पढ़ाई से तुम चेकिंग कर सकते हो कि हम उत्तम पार्ट बजा रहे हैं या मध्यम या कनिष्ट।

2] बच्चे दो तरफ से कमाई कर रहे हैं। एक तरफ है याद की यात्रा से कमाई और दूसरी तरफ है 84 के चक्र के ज्ञान का सिमरण करने से कमाई। इसको कहा जाता है डबल आमदानी औरै अज्ञान काल में होती है अल्पकाल क्षण भंगुर सिंगल आमदानी। यह तुम्हारे याद की यादा की आमदनी बहुत बड़ी है। आयु भी बड़ी हो जाती है, पवित्र भी बनते हो। सभी दु:खो से छूट जाते हो। बहुत बड़ी आमदनी है।

3] अब तुम हो ज्ञान सूर्यवंशी। फिर सतयुग में कहा जायेगा विष्णु वंशी। ज्ञान सूर्य प्रगटा..... इस समय तुम्हें ज्ञान मिल रहा है ना। ज्ञान से ही सद्गति होती है। आधाकल्प ज्ञान चलता है फिर आधाकल्प अज्ञान हो जाता है। यह भी ड्रामा की नूँध है।

4] तुम अपने ब्राह्मण धर्म और दैवी धर्म को बढ़ाते हो। ड्रामा अनुसार तुम बच्चे जरूर मददगार बनेंगे। कल्प पहले जो पार्ट बजाया था वह जरूर बजायेंगे। तुम देख रहे हो हर एक अपना उत्तम, मध्यम, कनिष्ट पार्ट बजा रहे हैं।

5] शरीर की बुद्धि नहीं कहेंगे। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। यह अच्छी रीति समझकर और फिर बच्चों को चिन्तन करना है। फिर समझाना होता है। वो लोग शास्त्र आदि सुनाने के लिए कितने दुकाने निकाल बैठे हैं। तुम्हारी भी दुकान है। बड़े-बड़े शहरों में बड़े दुकान चाहिए। बच्चे जो तीखे होते हैं, उनके पास खजाना बहुत रहता है। इतना खजाना नहीं है तो कोई को दे भी नहीं सकते हैं !

6] आत्मा क्या करेगी ! वो लोग तो जीवघात करते, डूब मरते हैं। इसमें घात आदि की बात नहीं। आत्मा का तो घात होता नहीं, वह तो अविनाशी है। बाकी शरीर का घात होता है, जिससे तुम पार्ट बजाते हो।

7] आत्मा के पवित्र होने से 5 तत्व भी नये बन जाते हैं। 5 तत्वों का ही शरीर बनता है। जब आत्मा सतोप्रधान है तो शरीर भी सतोप्रधान मिलता है। आत्मा तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान। अब सारी दुनिया के पुतले तमोप्रधान हैं, दिन-प्रतिदिन दुनिया पुरानी होती जाती, गिरती जाती है। नये से पुरानी तो हर एक चीज़ होती है। पुरानी हो फिर डिस्ट्रॉय होती है, यह तो सारी सृष्टि का सवाल है। नई दुनिया को सतयुग, पुरानी को कलियुग कहा जाता है। बाकी इस संगमयुग का तो किसको भी पता नहीं। तुम ही जानते हो यह पुरानी दुनिया बदलनी है।

8] हम सो का अर्थ बिल्कुल अलग है। ओम् का अर्थ अलग है। मनुष्य तो बिगर अर्थ जो आया वह कह देते हैं। अभी तुम जानते हो कि कैसे नीचे गिरते हैं फिर चढ़ते हैं। यह ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिलता है। ड्रामा अनुसार फिर कल्प बाद बाप ही आकर बतायेंगे।

9] जो भी धर्म स्थापक हैं, वह आकर फिर अपना धर्म अपने समय पर स्थापन करेंगे। **नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार नहीं कहेंगे। नम्बरवार समय अनुसार आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं।** यह एक बाप ही समझाते हैं, मैं कैसे ब्राह्मण फिर सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी डिनायस्टी स्थापन करता हूँ? अभी तुम हो ज्ञान सूर्यवंशी जो फिर विष्णुवंशी बनते हो।

10] बाबा को कहते हैं बाबा हम आपको याद करते हैं। आप हमको याद करते हैं ? अरे, याद तुमको करना है, पतित से पावन होने के लिए। मैं थोड़ेही पतित हूँ, जो याद करूँ। तुम्हारा काम है याद करना क्योंकि पावन बनना है। जो जितना याद करते हैं और अच्छी रीति सर्विस भी करते हैं, उनको धारणा होती है। याद की यात्रा बहुत डिफीकल्ट है, इसमें ही युद्ध चलती है। बाकी ऐसे नहीं कि 84 का चक्र तुम भूल जायेंगे। यह कान सोने का बर्तन चाहिए।

11] जिनका स्वभाव मीठा, शान्तिचित्त है उस पर क्रोध का भूत वार नहीं कर सकता।

12] यह पांच विकार जो लोगों के लिए जहरीले सांप हैं, यह सांप आप योगी वा प्रयोगी आत्मा के गले की माला बन जाते हैं। यह आप ब्राह्मणों वा ब्रह्मा बाप के अशरीरी तपस्वी शंकर स्वरूप का यादगार आज तक भी पूजा जाता है। दूसरा- यह सांप खुशी मे नांचने की स्टेज बन जाते हैं- यह स्थिति स्टेज के रूप में दिखाते हैं।

❋ 7 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ योग-

1] अभी तुम अपने बाद को याद करो। अपने को ईश्वरीय गवर्मेन्ट समझो। परन्तु तुम हो गुप्त। दिल में कितनी खुशी होनी चाहिए। अभी हम हैं श्रीमत पर। उनकी *(शिवबाबा की)* शक्ति से सतोप्रधान बन रहे हैं।

2] बच्चा बड़ा होता है तो बाप को याद करना पड़े। फिर टीचर को फिर गुरू को याद करना पड़े। भिन्न-भिन्न समय तर तीनों को याद करेंगे। यहाँ तो तुमको तीनों ही इकट्ठे एक ही टाइम मिलें हैं। बाप, टीचर, गुरू एक ही है।

3] बाप फरमान करते हैं मामेकम् याद करो। यह भूलना नहीं चाहिए। बाप कहते हैं तुम बहुत पुराने आशिक हो। तुम सब आशिकों का एक माशूक है।

4] जितना तुम याद करेंगे उतनी धारणा अच्छी होगी, इसमें ताकत रहेगी इसलिए कहते हैं याद का जौहर चाहिए। ज्ञान से कमाई है। याद से सर्व शक्तियां मिलती है नम्बरवार।

❋ धारणा-

1] मीठे बच्चे– बाप समान रहमदिल और कल्याणकारी बनो, समझदार वह जो खुद भी पुरूषार्थ करे और दूसरों को भी कराये।

2] धारणा नम्बरवार होती है। बच्चों को अच्छी रीति धारणा करनी है जो किसी को समझा सकें। बात कोई बड़ीं नहीं है, सेकण्ड की बात है– बाप से वर्सा लेना।

3] पुरूषार्थ करना चाहिए ऊंच पद पाने का। बाप कहते हैं जितना अभी पुरूषार्थ कर पद पायेंगे, वही कल्प-कल्पान्तर के लिए होगा।

4] अब बेहद का बाप जो बाप, टीचर, गुरू है। उनका फरमान है कि पावन बनो। काम जो महाशत्रु है, उन पर जीत पहन जगतजीत बनो। जगत जीत अर्थात् विष्णु वंशी बनो। बात एक ही है इन अक्षरों का अर्थ तुम जानते हो। बच्चे जानते हैं हमको पढ़ाने वाला है बाप। पहले तो यह पक्का निश्चय चाहिए।

5] अक्षर बड़ी खबरदारी से लिखने होते हैं, जो कोई भूल न निकाले।

6] अब बाप कहते हैं व्यर्थ की बातें तुम नहीं सुनो इसलिए हियर नो ईविल.... इसका चित्र बनाया है।

7] तो जब विकारों पर ऐसी विजय हो तब कहेंगे तपस्वीमूर्त, प्रयोगी आत्मा।

❋ सेवा-

1] सबसे उत्तम पार्ट उनका कहेंगे जो दूसरों को भी उत्तम बनाते हैं अर्थात् सर्विस कर ब्राह्मणों की वृद्धि करते हैं।

2] इन लक्ष्मी-नारायण के 84 जन्मों की कहानी तुम बता सकते हो।

3] तुम अभी समझदार बने हो। जितना-जितना तुम समझदार बनते हो औरों को भी आपसमान बनाने का पुरूषार्थ करते हो। तुम्हारा बाप रहमदिल, कल्याणकारी है तो बच्चों को भी बनना है।

4] सर्विस अनुसार तो वर्सा पाते हो, ईश्वरीय मिशन हो ना। जैसे क्रिश्चियन मिशन, इस्लामी मिशन होती है वह अपने धर्म को बढ़ाते हैं।

5] सबसे उत्तम पार्ट बह बजाते हैं, जो उत्तम बनाने वाला है। तो सभी को बाप का परिचय देना है और आदि, मध्य, अन्त का राज़ समझाना है।

6] बाप कहते हैं हफ्ता 15 दिन कोई ले फिर आप समान बनाने लग जाना चाहिए। जो बड़े-बड़े शहर हैं, कैपीटल में घेराव डालना चाहिए तो फिर उनका आवाज़ निकलेगा। बड़े आदमी बिगर कोई का आवाज़ निकल न सके। जोर से घेराव डालो तो फिर बहुत आयेंगे।